PAGE ......
DATE ../../....

भरहुत में आकृतियां प्रमुख रूप में उल्लेखनीय हैं :-
बुद्ध दर्शन को जाते नरेश व घोडो के रथ पर सवारियो का दृश्य
1- बुद्ध के उष्णीय पुजा का दृश्य।
2- नागराज ऐरावत द्वारा बोधि वृक्ष की पुजा।
3- मृग जातक
4- भरहुत के शिल्प में बुद्ध की मानवाकृतियां नही मिलती है। उसके स्थान पर चरणचिह्न छत्र चक्र पादुका आदि प्रतीक उकेरे गये हैं। भरहुत की कला में सांची जैसी लोच नही है। यहां लाल रवादार पत्थर का प्रयोग हुआ है। भरहुत में यक्षी वृक्ष का आलिंगन करती या शाखा को पकडे उकेरी गयी है। भरहुत के शिल्प से नारी आकृति की त्रिभंग मुद्रा का प्रारम्भ हुआ।

☆ **साँची का स्तूप :-** मध्य प्रदेश में विदिशा के पास बौद्ध धर्म का यह प्राचीन केन्द्र था। यह स्थान म० प्रदेश की राजधानी भोपाल के निकट है। यहां एक छोटी (300 फुट ऊं० पहाडी पर की) चोटी पर महास्तूप है। पश्चिमी ढलान पर स्तूप सं० दो तथा महास्तूप की चार दिशाओं में चार तोरण द्वार है। स्तूप सं० तीन महास्तूप की चार दिशाओ में चार तोरण द्वार है। स्तूप सं० तीन में चार तोरणद्वार है तथा स्तूप सं० दो में कोई तोरण द्वार नही है। महास्तूप का व्यास लगभग 120 फुट है तथा ऊँचाई 54 फुट है।

पर्सी ब्राउन ने इसके निर्माण और विकास की चार अवस्थाओं का उल्लेख किया है। उनके अनुसार लगभग 250 ई०पूर्व में सम्राट अशोक द्वारा इस स्तूप को ईटो से बनाया गया। उसके 100 वर्ष बाद 150 ई० पू० में इसे मूल रूप से दुगने आकार का विस्तार दिया गया तथा इसे पाषाण खण्डो की ईटो से ढका गया। 100 ई०पू में इसके मध्य भाग में चारो ओर वेदिका बनायी गयी और लगभग 53 ई० में स्तूप के चारो ओर चार तोरण द्वार निर्मित हुए। गढे हुए पत्थर से स्तूप को ढके जाने में किसी तरह की जुडाई का मसाला नही था। भारत वर्ष में चुने के बिना की हुई चिनाई का यह पहला उदाहरण था। साँची की वेदिका पर कोई अलंकरण नही है।

Scanned with CamScanner